Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 2, April-2023, ISSN 2230-7540

वैश्विक पटल पर हिन्दी साहित्य

मंजूलता सराठे[1]*, डॉ. पूर्णिमा चौधरी[2]

[1] शोधार्थी, भाभा विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

[2] शोध निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर (प्रध्यापक), भाभा विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

***सार** - आधुनिक युग में विश्व स्तर पर हमारी हिन्दी भाषा का परचम लहरा रहा है। क्योंकि विश्व में 132 देशों में भारतीय नागरिक उपस्थित हैं। लगभग 2 करोड़ लोग भारतीय मूल के विदेशों में अपना सारा कार्य हिन्दी माध्यम से ही निष्पादित करते है अर्थात कहने का तात्पर्य यह है कि 132 देशों में भारत के लोग बसे हुए है और वे सभी अपना काम-काज हिन्दी के माध्यम से ही करते हैं। साथ ही हिन्दी साहित्य का अपना महत्वपूर्ण समृद्ध इतिहास विद्यमान है। हिन्दी साहित्य ने ही विश्व साहित्य में कई तरह से महत्वपूर्ण अपनी भागीदारी साझा की है। हिन्दी साहित्य विविधता में एकता दर्शाने का कार्य भी करती है। क्योंकि भारत एक धर्म-निरपेक्ष देश है यहाँ विविध प्रकार के धर्म तथा संस्कृति विद्यमान है इसलिए यह कहा भी जाता है कि चार कोस पे पानी बदले आठ कोस पे वाणी हिन्दी साहित्य देश की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने-सवारने, संरक्षित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, एक साधन है।*

आज समस्त विश्व में हिन्दी भाषा को बोलने-समझने एवं लिखने-पढ़ने वाले लोग रहते हैं। आज के दौर में अब इंटरनेट पर भी देव नागरी लिपि उपलब्ध है। 132 देषों में हिन्दी भाषा में कार्य किया जाता है। लोक-व्यवहार संस्कार-संस्कृति, व्यापारिक, धार्मिक तथा राजनैतिक व्यवहार के लिए हिन्दी भाषा को ही चुना जाता है या आप कह सकते है कि हिन्दी ही ऐसी भाषा है जो सफलतापूर्वक आदान-प्रदान की भाषा रूप रखती है।

***कीवर्ड-** समाज, हिन्दी साहित्य,हिन्दी भाषा, भाषा लिपि*

----------X----------

परिचय

आधुनिक युग में विश्व स्तर पर हमारी हिन्दी भाषा का परचम लहरा रहा है। क्योंकि विश्व में 132 देशों में भारतीय नागरिक उपस्थित हैं। लगभग 2 करोड़ लोग भारतीय मूल के विदेशों में अपना सारा कार्य हिन्दी माध्यम से ही निष्पादित करते है अर्थात कहने का तात्पर्य यह है कि 132 देशों में भारत के लोग बसे हुए है और वे सभी अपना काम-काज हिन्दी के माध्यम से ही करते हैं। साथ ही हिन्दी साहित्य का अपना महत्वपूर्ण समृद्ध इतिहास विद्यमान है। हिन्दी साहित्य ने ही विश्व साहित्य में कई तरह से महत्वपूर्ण अपनी भागीदारी साझा की है। हिन्दी साहित्य विविधता में एकता दर्शाने का कार्य भी करती है। क्योंकि भारत एक धर्म-निरपेक्ष देश है यहाँ विविध प्रकार के धर्म तथा संस्कृति विद्यमान है इसलिए यह कहा भी जाता है कि चार कोस पे पानी बदले आठ कोस पे वाणी हिन्दी साहित्य देश की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने-सवारने, संरक्षित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, एक साधन है।

हिन्दी साहित्य ही विविधता में भारत की सांस्कृतिक विविधता का प्रतिनिधित्व करती नजर आती है। हिन्दी साहित्य ने ही भारत के मूल्यों को दर्शाने का विशिष्ट कार्य किया है। तथा भारत की समृद्धि में अपना अमूल्य योगदान दिया है। आज पूरी दुनिया में 500 मिलियन से अधिक लोगों द्वारा हिन्दी भाषा बोली, सुनी जाती है। जिसकी वजह से हिन्दी भाषा को विश्व स्तर पर बढ़ावा मिलता है और हिन्दी भाषा को संरक्षित करने में सहायता मिलती है। पूरे विश्व में आज हिन्दी भाषा का बोल-बाला है क्योंकि प्रचार-प्रसार में हिन्दी भाषा, हिन्दी साहित्य को

www.ignited.in

एक महत्वपूर्ण विशिष्ट साधन, माध्यम माना जाता है। हिन्दी साहित्य के अनेकों लेखकों एवं कवियों ने अंर्तराष्ट्रीय पुरूस्कार तथा सम्मान व प्रशंसाऐं प्राप्त की है। विश्व में वैष्विक साहित्यक परिदृष्य पर हिन्दी साहित्य ने अपना महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है जिसके कारण कई अंर्तराष्ट्रीय विचारकों, लेखकों, कवियों के कार्य को प्रभावित किया है। उदाहरण के लिए तुलसीदास की कविताए और कबीर की कविताओं ने राल्फ वाल्डो एमर्सन तथा मार्टिन हाईडेगर जैसे पश्चिमी लेखकों को प्रभावित किया है। हिन्दी साहित्य ने ही विश्वबन्धुत्व व विष्व के कल्याण की भावनाओं को जाग्रत करने में अहम भूमिका निभाने का कार्य किया है। क्योंकि प्रेम की भावना के द्वारा भारत की ही नहीं बल्कि सारे विष्व की मंगल कामना का मनन व चिंतन किया जा सकता है।

विश्वबन्धुत्व

विश्व-मंगल की भावना से भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार ही जीवनमात्र के प्रति प्रेम, दया व सहानुभूति है। भारतीय मनीषियों की 'वसुधैवकुटुम्बकम' के आदर्ष में आस्था सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखने की है सत्य, प्रेम और अंहिसा पर आधारित गाॅधी-दर्शन का उद्देश्य वस्तुतः सर्व मंगल की भावनाओं के द्वारा विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास करना ही है। विश्वबन्धुत्व की आधारशीला प्रेम है जब सभी प्राणियों से आत्मवत प्रेम करेंगे, तभी राष्ट्र-राष्ट्र के बीच दीवारें टूट कर विष्व प्रेम की भावनाओं का विकास होगा-जब तक राष्ट्र एक-दूसरे से स्वतंत्रता और मित्रता का व्यवहार न करेंगे और तब तक हम संगठित और समन्वित जीवन की नई धारणा को विकसित न करेंगे तब तक हमकों शांति नहीं मिलेगी। इस लोक के मानव-समाज और सभ्यता का भविष्य आत्मा स्वतंत्रता न्याय और प्रेम की गहरी विश्व भावनाओं के साथ बंधा हुआ है भारत ही नहीं सम्पूर्ण मानवता का भविष्य विश्वबन्धुत्व की भावना में समाया हुआ है।

उक्त कोटेशन से सिद्ध होता है कि विश्व पटल पर हिन्दी साहित्य ने अपनी अमित छाप छोड़ी है सम्पूर्ण विश्व कल्याण के लिए, सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक तथा धार्मिक समस्याओं के निराकरण, समाधान व प्रत्येक परिस्थितियों का सामना हम विश्वबन्धुत्व की भावना को अपना कर सकते है। तभी जाकर के हम विश्व मंगल की भावनाओं का विकास यथा संभव कर सकते है। हिन्दी साहित्य के दृष्टिकोण ने समस्त मानव समाज के सर्वांगीण विकास यात्रा को सषक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आज समस्त विश्व में हिन्दी भाषा को बोलने-समझने एवं लिखने-पढ़ने वाले लोग रहते हैं। आज के दौर में अब इंटरनेट पर भी देव नागरी लिपि उपलब्ध है। 132 देशों में हिन्दी भाषा में कार्य किया जाता है। लोक-व्यवहार संस्कार-संस्कृति, व्यापारिक, धार्मिक तथा राजनैतिक व्यवहार के लिए हिन्दी भाषा को ही चुना जाता है या आप कह सकते है कि हिन्दी ही ऐसी भाषा है जो सफलतापूर्वक आदान-प्रदान की भाषा रूप रखती है।

"यह निर्विवाद है कि भारत की सभी भाषाएं अपने-अपने स्थान पर महत्वपूर्ण, सम्पन्न तथा समृद्ध हैं। पर व्याप्ति की दृष्टि से हिन्दी सर्वाधिक व्याप्त भाषा है। डॉ. ग्रियर्सन महोदय ने अपने भाषा सर्वेक्षण में ठीक ही कहा है कि हिन्दी का विकास प्रारंभ से ही अंतरभाषा के रूप में हुआ है। इस प्रकार से हिन्दी भाषा का अपना ही विराट स्वरूप है इसलिए आधुनिक काल में हिन्दी साहित्य की रचनाएँ एवं काव्य अत्यधिक रचा व गढ़ा गया हिन्दी साहित्य का प्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर पड़ा है। हिन्दी साहित्य में गॉधी दर्शन के विविध आयाम हम देख सकते है या ऐसा भी माना गया है कि हिन्दी साहित्य में गॉधी जी के विचारों को अत्यंत जगह दी गई है क्योंकि गॉधी जी एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसे सारा विष्व भली-भांति जानता है। गॉधी की प्रांसगिकता विष्व शांति के संदर्भ में कुछ इस प्रकार से है कि महात्मा गॉधी का और अहिंसा का संदेश मूलतः विश्व शांति का संदेश था बापू ने अपने समय में दुनिया के दो-दो विश्वयुद्ध देखे थे। उस समय लोगों में हिंसा और प्रति हिंसा की जबरदस्त भावना थी। ऐसे समय में बापू ने अंहिसक क्रांति के द्वारा वर्तमान और भविष्य के लिए जीवन का एक सम्पूर्ण संदेश दिया। बापू के सत्य और अंहिसा का विचार बहुत ही व्यापक अर्थ में था। अहिंसा से उनका मतलब केवल हिंसा के अंत से नहीं था, बल्कि प्रेमपूर्ण जीवन से था।"

आज सारे विश्व को सत्य और अहिंसा व शांति के मार्ग पर चलने की अति आवश्यकता दिखाई पड़ती है। कोई भी देश युद्ध करना नहीं चाहता क्योंकि युद्ध से जान-माल की हानि तो होती ही है, साथ ही देश की अर्थ व्यवस्था भी बहुत खराब हो जाती है। इसलिए गॉधी के विचारों का सार बहुत अधिक प्रांसगिक है। यह प्रासंगिकता केवल भारत के संदर्भ में नहीं बल्कि विश्व के संदर्भ में दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए

विष्व भाषा हिन्दी का उत्कृष्ट काव्य संकलन "अखिल भारत साहित्यकार अभिनंदन समिति, मथुरा के मुख्य निदेशक एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. श्यामसुंदर सुमन के कर्मठ संपादन नेतृत्व में प्रकाशित अंतर्राष्ट्रीय काव्य-संकलन "सूरज नहीं डूबेगा अब" एक उत्कृष्ट कृति है। इसमें ग्रीक, रूसी, अंग्रेजी, अमरीकी, बर्मी, चीनी, थायलेंड भाषाओं की कविताओं के अनुवाद सहित उड़िया, तेलुगु, मैथिली, पंजाबी, बांग्ला की एक-एक कविता तथा हिन्दी की 38 कविताए संकलित है। हिन्दी कविताओं में शामिल सशक्त हस्ताक्षरों में शामिल सशक्त हस्ताक्षरो में बच्चन, रामविलास शर्मा, शिव मंगल सिंह सुमन, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती आदि है। इसमें संकलित कविताओं के महत्व को मान्यता देते हुए विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ भागलपुर ने इस संकलन को अपने साहित्य-पत्र के दुरत पाठ्य-पुस्तक के रूप में "साहित्यचार्य" (एम.ए.स्तर) पाठयक्रम हेतु स्वीकृत किय है।" इस प्रकार उक्त विवेचन से हमें ज्ञात होता है कि विश्व के पटल पर हिन्दी भाषा को हिन्दी साहित्य को एक महत्वपूर्ण स्थान मिला है इसलिए विश्व में हिन्दी भाषा को समझने वाले लोगों की संख्या दिन दोगुनी रात चैगुनी होती जा रही है। हिन्दी साहित्य कोई छोटी-मोटी विधा नहीं है अर्थात यदि हिन्दी साहित्य को समझना है तो आओ हम इसका संक्षिप्त रूप से इसे निम्न रूप से समझने का प्रयास करते है। "हिन्दी साहित्य एक प्रकार से भारत वर्ष का राष्ट्रीय-साहित्य है। भारत वर्ष की आत्मा का प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखने वाला यह साहित्य बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस साहित्य में स्थानीय विशिष्टताओं के होने पर भी प्रांतीयतावाद का दोश नहीं मिल सकता। इसमें समस्त भारत वर्ष का दर्शन सुलभ है। इसमें भारत वर्ष के सभी वर्गो का समस्त प्रांतों का भारत वर्ष की दीनता और निर्धनता का भारत के तेज और गौरव का भारतवर्ष के आंदोलनों और संघर्षो का भारतवर्ष की हृदय की विषालता का मन की छटपटाहटों का एवं आत्मा की अमरता का चित्र मिलता है। बड़ा अनोखा साहित्य है यह। अस्तु इस साहित्य को समझने के लिए इस राष्ट्र की संस्कृति का अध्ययन अनिवार्य है। भारतवर्ष की संस्कृति को समझे बिना हम हिन्दी साहित्य का वास्तविक महत्व न समझ सकते है और न ही इसका सही मूल्यांकन कर सकते है।"

समस्त उक्त विवेचन से हमें ज्ञात हुआ है कि (1)हिन्दी एक विश्व भाषा है क्योंकि (2) यह जन तांत्रिक आधार प्राप्त भाषा है (3) इस भाषा को समझे तथा बोलने वालों की सर्वाधिक संख्या विश्व में तीसरी है। साथ ही (4) विश्व के 132 देशों में रहने वाले भारतीय लोगों की अत्यधिक जनसंख्या है तथा लगभग 2 करोड़ से अधिक लोग अपना काम-काज हिन्दी भाषा में ही करते है। यह (5) एशिया की प्रतिनिधि भाषा भी है यह भाषा अपनी विशिष्ट भूमिका भी अदा करने का कार्य करती है एशियाई संस्कृति में (6) हिन्दी भाषा का किसी भी प्रकार से कहीं भी किसी भी देश में विरोध-प्रतिरोध नहीं है। (7) हिन्दी भाषा का उपयोग आज कल इंटरनेट के द्वारा भी बहुत किया जा रहा है। (8) हिन्दी भाषा का शब्दकोश भी अत्यधिक बढ़ा है। (9) हिन्दी भाषा धीरे-धीरे लोक प्रियता को प्राप्त हो रही है अर्थात हिन्दी भाषा अब एक सर्वप्रिय एवं लोकप्रिय भाषा बन चुकी है। (10) हिन्दी साहित्य एक विषालकाय साहित्य है जो विश्व के पाठकों को अपनी और आक्रर्षित करता है। (11) 14 सितम्बर को हिन्दी विश्व दिवस भी मनाया जाता है। इस प्रकार से सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी भाषा का अपना ही उच्च स्तर है तथा वैष्विक पटल पर हिन्दी साहित्य का विशेष महत्व भी है।

संदर्भ सूची

गॉधीवादी दर्शन और साहित्य लेखक डॉ. पंडित बन्ने प्रकाशक- अभिषेक प्रकाशन नई दिल्ली-110015 प्रथम संस्करण-2020 पृ.सं. 14,15

महात्मा गांधी का शैक्षणिक चिंतन लेखक- डॉ. डी.एन. प्रसाद प्रकाशक- विकल्प प्रकाशन दिल्ली- 110094 प्रथम संस्करण - 2017 पृ.सं. 210

युग मानस साहित्यक त्रैमासिकी अंक-10 एवं 11 प्रधान संपादक- सी. जयशंकर बाबू संपादक ए. राधिका वर्ष जनवरी-जून-1999 प्रकाशक युगमानस कार्यालय गुंतकल-515801(आं.प्र.) दूरभाष-(08552) 46888 पृ.सं. 25

युग मानस साहित्यक त्रैमासिकी अंक-10 एवं 11 प्रधान संपादक- सी. जयशंकर बाबू संपादक ए. राधिका वर्ष जनवरी-जून-1999 प्रकाशक युगमानस कार्यालय गुंतकल-515801(आं.प्र.) दूरभाष-(08552) 46888 पृ.सं. 40

आधुनिक हिन्दी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्टभूमि लेखक- डॉ. भोलानाथ प्रकाशक- रामगोपाल परदेशी संचालक प्रगति प्रकाशन आगरा- 3 प्रथम संस्करण-1969 पृ.सं. 29

Corresponding Author

मंजूलता सराठे*

www.ignited.in

शोधार्थी, भाभा विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)